Chapter 2

bihar board 9th class civics notes – लोकतंत्र क्या और क्यों?

लोकतंत्र क्या और क्यों?

अध्याय की मुख्य बातें —वैसी शासन व्यवस्था जो लोगों द्वारा चुनी जाती है और लोगों के हित में शासन करती है उसे लोकतंत्र या लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था कहा जाता है तथा जो सरकार तख्तापलट, पारिवारिक, परंपरा आदि से स्थापित होती है उसे गैर-लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था कहा जाता है।

भारत में सरकार का निर्माण चुनावों के माध्यम से होता है । इसके लिए प्रत्येक पाँच वर्ष पर चुनाव होते हैं जिसमें 18 वर्ष से अधिक उम्र के नागरिक अपना मत देते हैं । इस चुनाव में जिसे सबसे ज्यादा वोट आता है वे चुनाव जीत जाते हैं । वे देश के लोगों के प्रतिनिधि कहलाते हैं और वे लोग सरकार का निर्माण करते हैं और शासन के संचालन में भागीदारी निभाते हैं। इस तरह लोगों की भागीदारी वाली सरकार लोकतांत्रिक कहलाती है और जिसमें लोगों की भागीदारी नहीं होती है वह गैर लोकतांत्रिक होती है।

अब्राहम लिंकन की लोकतंत्र की परिभाषा-"लोकतंत्र ऐसा शासन है जिसमें लोगों का लोगों के लिए और लोगों द्वारा शासन किया जाता है।" लोकतंत्र के दो प्रकार होते हैं—प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष लोकतंत्र । प्रत्यक्ष लोकतंत्र में जनता की शासन में सीधे भागीदारी होती है जबकि अप्रत्यक्ष

लोकतंत्र में जनता की प्रतिनिधियों के द्वारा शासन में भागीदारी सुनिश्चित होती है।

लोकतंत्र में संविधान के अनुसार देश का शासन चलता है। लोकतंत्र में लोगों के मौलिक की गारंटी होती है ।लोगों को सोचने की, अपने विचार देने की, संगठन बनाने की, राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने की स्वतंत्रता होती है। कानून की नजर में सबकी बराबर होते हैं यानी समानता की भावना साफ झलकती है । मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए स्वतंत्र न्यायपालिका होती है जिसकी आदेशों का पालन हम सब करते हैं।

लोकतंत्र में सरकारी सेवकों की जिम्मेदारियाँ संविधान द्वारा तय की जाती है और वे जनता के प्रति उत्तरदायी होते हैं इस प्रकार लोकतंत्र में लोगों के अधिकरों की गारंटी होती है और सरकार संवैधानिक कानूनों के भीतर ही काम करती है।

लोकतंत्र में बहुमत प्राप्त दल का ही शासन होता है। इसमें लोगों द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि ही सारे फैसले लेते हैं। चुनाव निष्पक्ष एवं स्वतंत्र होते हैं। चुनाव से बनी सरकार संविधान द्वारा निर्धारित तौर-तरीकों एवं नियमों के अंदर ही कार्य करती है और सरकार लोगों के अधिकारों को सुरक्षित रखती है। चुनाव में अनेक दलों की भागीदारी होती है जिसके कारण लोगों के पास शासकों को बदलने के विकल्प और अवसर उपलब्ध होते हैं।

लोकतंत्र के विपक्ष में तर्क पेश किये जाते हैं कि यह खर्चीला शासन है तथा इससे यह भ्रष्ट नेताओं के हाथ का खिलौना बन जाता है इसमें नैतिकता की कोई जगह नहीं होती है आदि-आदि । इन तर्कों से लगता है कि लोकतंत्र एक आदर्श शासन नहीं है फिर भी हमारे सामने जितने भी शासन है उनमें लोकतंत्र ही बेहतर शासन प्रतीत होता है।

लेकिन लोकतंत्र के पक्ष में यह तर्क दिए जाते हैं कि इसमें लोगों को स्वतंत्रता के अधिकार, समानता का अधिकार, जीवन जीने का अधिकार आदि मानवाधिकार का उपयोग व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने में कर सकता है। इसमें व्यक्ति की गरिमा और सम्मान को बढ़ावा मिलता है जो लोकतंत्र का सर्वप्रमुख गुण है। लोकतंत्र एक आदर्श के रूप में तभी आयेगा जब देश के कोई भी व्यक्ति भूखे पेट नहीं सोयेगा, सभी को समानता का अधिकार मिलेगा, सूचना उपलब्ध होगा,शिक्षा उपलब्ध होगा। इस आदर्श पर ही लोकतंत्र में समस्याओं का समाधान को ढूंढा जा सकता है। व्यापक अर्थ में लोकतंत्र एवं राजनीतिक व्यवस्था ही नहीं वरन् एक नैतिक धारणा तथा सामाजिक परिस्थिति भी है जो मनुष्य में निष्ठा पैदा करती है तथा जीवन जीने का एक ढंग प्रदान करती है।

https://www.evidyarthi.in/